International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका

डॉ. प्रिया[1], पवित्रा[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, महालक्ष्मी कॉलेज फॉर गर्ल्स, दुहाई, गाजियाबाद
[2]एम.एड छात्र, महालक्ष्मी कॉलेज फॉर गर्ल्स, दुहाई, गाजियाबाद

प्रस्तावना:

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है, जब हम महिलाओं को स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीने की स्वतंत्रता देते हैं तो हम उन्हें महिलाओं के व्यक्तिगत मामलों में निर्णय लेने का अधिकार देते हैं। महिलाओं के निजी व्यवसायिक मामलों में दखलअंदाजी न करें। इससे महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक विकास और लैंगिक समानता में अवसर, अधिकार और स्वतंत्रता मिलती है। जिससे महिलाएं अपने जीवन के अवसरों और अधिकारों पर स्वतंत्र निर्णय लेकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। महिलाओं पर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और रीति-रिवाज या अन्य पूर्वाग्रह उनके लिए एक स्वतंत्र वातावरण बनाते हैं। जो महिलाओं के जीवन विकास के लिए बेहद जरूरी है। वह समाज के सभी पहलुओं में स्वतंत्र रूप से भाग लेती है। अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग करता है। महिलाएं खुद को बौद्धिक, कुशलता, सक्षमता, निर्णायक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाती हैं।

जब महिलाओं को ऐसे अधिकार मिलेंगे तो महिलाएं अपना सर्वांगीण विकास कर सकती हैं। महिलाओं के साथ कोई लैंगिक भेदभाव नहीं है, बल्कि उन्हें हर कदम पर पुरुषों के समान अधिकार, अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त है। महिलाएं देश के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। शिक्षा महिलाओं के लिए मील का पत्थर है सशक्तिकरण क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का जवाब देने,अपनी पारंपरिक भूमिका और परिवर्तन का सामना करने में सक्षम बनाता है। ताकि हम महिला सशक्तिकरण और भारत के संदर्भ में शिक्षा के महत्व को नजरअंदाज न कर सकें हाल के वर्षों में महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर महिलाओं की शिक्षा परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम है भारत में महिला शिक्षा समय की मांग है, क्योंकि महिला का सशक्तिकरण की आधारशिला शिक्षा है शिक्षा असमानताओं में भी कमी लाती है और एक साधन के रूप में कार्य करती है परिवार के भीतर उनकी स्थिति में सुधार और भागीदारी की अवधारणा विकसित होती है।

महिला सशक्तिकरण एक वैश्विक मुद्दा है और महिलाओं के राजनीतिक अधिकार पर चर्चा दुनिया भर में कई औपचारिक और अनौपचारिक अभियानों में सबसे आगे है। महिला सशक्तिकरण की अवधारणा 1985 में NAROIBI में अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में पेश की गई थी। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का मील का पत्थर है क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का जवाब देने, अपनी पारंपरिक भूमिका का सामना करने और अपना जीवन बदलने में सक्षम बनाती है। इसलिए, हम महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के महत्व को नजरअंदाज नहीं कर सकते। महिला शिक्षा में विकास को देखने के लिए भारत को हाल के वर्षों में दुनिया की आगामी महाशक्ति माना

जाता है। महिला शिक्षा में बढ़ते बदलाव के साथ, महिलाओं की स्थिति निर्धारित करने में महिलाओं के सशक्तिकरण को केंद्रीय मुद्दे के रूप में मान्यता दी गई है। महाशक्ति बनने के लिए हमें सबसे अधिक ध्यान महिला शिक्षा पर देना होगा। जिससे महिला सशक्तिकरण को बल मिलेगा। महिलाओं के लिए संयुक्त राष्ट्रीय विकास कोष (यूनिफेम) के अनुसार, महिला सशक्तिकरण शब्द का अर्थ है:

- लिंग संबंधों का ज्ञान और समझ प्राप्त करना और उन तरीकों को समझना जिनसे ये संबंध बदल सकते हैं।
- आत्म-मूल्य की भावना विकसित करना, वांछित परिवर्तन सुरक्षित करने की क्षमता में विश्वास और अपने जीवन को नियंत्रित करने का अधिकार विकसित करना।
- विकल्प उत्पन्न करने की क्षमता प्राप्त करने से सौदेबाजी की शक्ति का अभ्यास होता है।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक न्यायपूर्ण सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था बनाने के लिए, सामाजिक परिवर्तन की दिशा को संगठित करने और प्रभावित करने की क्षमता विकसित करना।

इस प्रकार, सशक्तिकरण का अर्थ व्यक्तिगत नियंत्रण या प्रभाव की मनोवैज्ञानिक भावना और वास्तविक सामाजिक प्रभाव, राजनीतिक शक्ति और कानूनी अधिकारों से संबंधित है। यह व्यक्तियों, संगठनों और समुदाय को संदर्भित करने वाली एक बहु-स्तरीय संरचना है। यह एक अंतरराष्ट्रीय, चल रही प्रक्रिया है जो स्थानीय समुदाय पर केंद्रित है, जिसमें आपसी सम्मान, आलोचनात्मक प्रतिबिंब, देखभाल और समूह की भागीदारी शामिल है, जिसके माध्यम से मूल्यवान संसाधनों के बराबर हिस्से की कमी वाले लोगों को इन संसाधनों पर नियंत्रण की अधिक पहुंच प्राप्त होती है।

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का योगदान: समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। यह केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास तक ही सीमित नहीं है बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यूनेस्को ने उम्र, लिंग, नस्ल या सामाजिक और आर्थिक स्थिति में किसी अन्य अंतर की परवाह किए बिना शिक्षा के समान अवसर प्राप्त करने के लिए अपना प्रयास किया। स्त्री शिक्षा से बौद्धिक विकास प्राप्त होगा जिससे समाज के व्यवहार में सरसता आएगी। मानसिक और नैतिक शक्ति के विकास में महिलाएं पुरूषों का सम्पूर्ण योगदान दे रही हैं। एक शिक्षित नारी गृहस्थ-जीवन में शांति और खुशहाली का स्रोत होती है। स्त्री शिक्षा हमारे संस्कृति के ऊर्जा और विकास का संचार है।

1. **कौशल विकास**: शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपनी नेतृत्व क्षमता संचार और कौशल को निखारती हैं। साथ ही वित्तीय प्रबंधन, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम हैं।
2. **आर्थिक सशक्तिकरण**: महिला को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा के माध्यम से युवा अपने स्किल को इंप्रूव कर पाता है शिक्षा के माध्यम से ही वह अपने आपको सशक्त और सक्षम बना पाता है शिक्षा के माध्यम से ही बाहर रोजगार को प्राप्त करता है शिक्षा के माध्यम से वह नए व्यवसाय या अन्य किसी न किसी आर्थिक गतिविधियों में पार्टिसिपेट करता है जिससे महिला आर्थिक रूप से सशक्त और समृद्ध हो पाती है।
3. **सामाजिक विकास**: महिलाओं में शिक्षा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है अगर सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से देखें तो अगर महिला शिक्षित होती हैं तो वह शिक्षा के माध्यम से सहानुभूति सहयोग विविधता संचार और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देने में मदद करती है शिक्षा के माध्यम से एक नारी उच्च पदों पर

पदस्थ होती हैं वह सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़कर भाग लेती है राजनीतिक गतिविधियों में बढ़ चढ़कर भाग लेती है और विकास को बढ़ावा देने में मदद करती हैं शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके कारण नारी अपने सामाजिक विकास को उच्च स्थान तक पहुंचा पाता है।

4. **माता-पिता की शिक्षा**: शिक्षित माता-पिता शिक्षा के माध्यम से अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं जिससे वे अपने बच्चों परिवार की आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति को ऊंचा उठा सकते हैं तथा अपने जीवन के मूल्यों को संतुष्ट और सफल बना सकते हैं शिक्षा के माध्यम से महिला अपने जीवन को सकारात्मक पहलू में बेहतर बनाती हैं जिससे वह अच्छे माता-पिता की भूमिका निभा पाती है।
5. **अनुसंधान और विकास**: शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अनुसंधान और प्रौद्योगिकी से संबंधित कौशल में महारत हासिल कर सकती हैं। शिक्षा ही महिलाओं में अनुसंधान और प्रौद्योगिकी करने के लिए इन कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होती है। जिससे महिलाएं रिसर्च और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आगे बढ़कर काम करती हैं। जो महिला सशक्तिकरण की अनूठी मिसाल पेश करती है। अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की उन्नति किसी भी देश के आर्थिक विकास, बौद्धिक विकास और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। जिसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
6. **राजनीतिक शिक्षा**: नारी के जीवन में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है इसके माध्यम सेवा लोकतांत्रिक मूल्यों और सिद्धांतों को समझती है और उसका उपयोग करती हैं जिससे राजनीतिक प्रक्रिया मैं एक जिम्मेदार सरकार को चुनने में मदद करती हैं साथ ही साथ शिक्षित नारी राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेकर राजनीति क्षेत्रों की बागडोर संभालते हैं और वह एक अच्छी सेविका और शासक के रूप में काम करती हैं जिससे राजनीतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है।
7. **वैश्विक शिक्षा**: अंतरराष्ट्रीय मूल्य को बढ़ाने में नारी शिक्षा की भूमिका अति आवश्यक है जब तक नारी शिक्षित नहीं होगी तब तक अंतरराष्ट्रीय संस्कृति सहयोग और संचार को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना मुश्किल होगा जब नारी शिक्षित होती है तो वह अंतरराष्ट्रीय मूल्य को बेहतर ढंग से समझती है और उसको उपयोग करती हैं वैश्विक शिक्षा के माध्यम से नारी अपने कौशल का विकास करती है रोजगार प्राप्त करती है और वैश्विक चिंताओं को दूर करने में सहयोग करती हैं विदेश तब तक आर्थिक समृद्धि नहीं बन सकता है जब तक उस देश की नारी शिक्षित ना हो।
8. **व्यावसायिक शिक्षा**: आज के आधुनिक विश्व में शिक्षा बिना शिक्षा के किसी भी छात्र के लिए एक हथियार की तरह काम करती है चाहे पुरुष हो या महिला रोजगार प्राप्त नहीं कर सकता है। लेकिन शिक्षा के माध्यम से वह विभिन्न क्षेत्रों में अपना करियर बना सकता है। यानी शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपने बौद्धिक विकास के साथ-साथ कौशल विकास के लिए भी प्रयास करती हैं। और शिक्षा महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
9. **आजीवन सीखना**: शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ क्षेत्रीय सामाजिक राज्य स्तरीय देसी अंतर्राष्ट्रीय विकास में सहयोग करता है शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति पूरे जीवन भर सीखते जाते हैं और अपने व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है जिससे लोगों को अपने बदलते परिवेश में समायोजित करने की नई संभावनाओं को पैदा करने की सुविधा प्राप्त होती है जब नारी शिक्षित होती है तो वह जीवन भर अपने शिक्षा और अनुभव के माध्यम से अपने जीवन को विकसित और बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयास करती हैं वह अपने साथ-साथ परिवार समाज देश को समृद्ध बनाने में सहायता करती हैं।
10. **सांस्कृतिक विरासत संरक्षण**: नारी की शिक्षा से सांस्कृतिक विरासत संरक्षण प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है जब नारी शिक्षित होती हैं तो अपनी शिक्षा के माध्यम से अपनी संस्कृति और अपनी परंपराओं को

अच्छी तरह से जान पाते हैं और उन संस्कृति और परंपराओं का अच्छे से निर्वाह करती हैं वह अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखने के लिए अपने स्तर में प्रयास करती हैं अपनी भावनाओं को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़े रखती हैं नारी जब शिक्षित होती है तो वह अपनी संस्कृति और परंपराओं को पहचान और सम्मान देती है जिससे सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और वृद्धि होता है।

11. **नागरिक शिक्षा**: नारी में शिक्षा एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका अदा करती है जब नारी शिक्षित होती है तो है एक जिम्मेदार नागरिक की तरह सरकार की योजनाओं का लाभ उठा पाते हैं और अपनी बातों को सरकार तक पहुंचाती है जब नारी शिक्षित होती हैं तो वह अपने आसपास के समाज को जोड़ने में अपनी शिक्षा का उपयोग करती हैं जिससे नागरिक जुड़ा विकसित करने में मदद मिलती है समुदायों का निर्माण होता है जिम्मेदार नारी शिक्षा के माध्यम से सरकारों से जवाबदेही की मांग के लिए अपने शिक्षा और अनुभवों का उपयोग करती हैं जिससे एक अच्छे राष्ट्र और समाज का निर्माण होता है।
12. **पर्यावरण शिक्षा**: नारी की शिक्षा पर्यावरण संरक्षण संवर्धन के लिए अति आवश्यक होता है जब एक नारी शिक्षित होती है तब आप पर्यावरण के प्रति गंभीर होती हैं वह पर्यावरण की संरक्षण और संवर्धन के लिए अनेक प्रयास करती हैं शिक्षा के माध्यम से नारी में पर्यावरण के प्रति चेतना और स्थिरता जागृत होती हैं जो पर्यावरण को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने में जोड़ देती है तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाती है नारी की शिक्षा पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के लिए लोगों में चेतना और प्रोत्साहन को जागृत करने में अहम भूमिका निभाती है।
13. **स्वास्थ्य शिक्षा**: नारी में शिक्षा के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता जागृत होता है एक शिक्षित नारी में अच्छी आदतों और अच्छे जीवन शैली को लेकर गंभीरता उत्पन्न होती है और जब शिक्षित नारी अपने स्वास्थ्य को लेकर गंभीर होती है तो आपने स्वस्थ और जीवनशैली को बेहतर बनाने में शिक्षा की मदद लेती हैं जिससे नारी के जीवन में स्वास्थ्य के नकारात्मक परिणाम दूर हो जाते हैं और वह धीरे-धीरे स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होते जाते हैं इससे नारी की चिकित्सा व्यय और तनाव कम हो जाता है और नारी एक खुशहाल जीवन जीती है।
14. **स्वास्थ्य और कल्याण**: शिक्षा एक ऐसा माध्यम होता है जिसके कारण व्यक्ति अपने जीवन का विकास संभव है तब से बेहतर ढंग सीकर पाता है नारी में जब शिक्षा बढ़ती जाती है तो वह पोषण प्रजनन बीमारी स्वास्थ्य के गंभीर परिणाम को रोकने में अपने शिक्षा और अनुभव के साथ साथ डॉक्टरी सलाह और तर्कों के साथ बुद्धि का उपयोग करती हैं जिससे महिला में स्वास्थ्य और पोषण को लेकर सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं नारी स्वास्थ्य और अपने कल्याण के लिए शिक्षा के माध्यम से अनेक बीमारियों की रोकथाम के लिए प्रयासरत रहती है जो नारी के चिकित्सा व्यय और मानसिक चिंताओं को दूर करने में मदद करती हैं साथ ही साथ वह एक खुशहाल जीवन व्यतीत करती हैं।
15. **जानकारी प्राप्त करना**: शिक्षा एक ऐसा माध्यम होते हैं जिससे किसी भी विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने बौद्धिक क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है एक शिक्षित नारी अपने बौद्धिक विकास के लिए शिक्षा प्राप्त करके अपने अधिकारों को बेहतर ढंग से समझ सकती है और उसका उपयोग कर सकते हैं संसाधनों तक पहुंच कर उन संसाधनों का बेहतर ढंग से उपयोग कर सकती हैं अपने व्यक्तित्व विकास को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से एक नारी उपयोग कर सकती है शिक्षा के माध्यम से नारी अपने जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग कर सकती हैं एक नारी शिक्षा के माध्यम से अपने अध्यात्मिक और भौतिक विकास को बढ़ावा दे सकती हैं वह आर्थिक राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक और अन्य मामलों में भी शिक्षा के माध्यम से सशक्त और समृद्ध हो सकती हैं।

निष्कर्ष:

किसी भी समाज को सभ्य समाज का दर्जा तब तक नहीं प्राप्त होता, जब तक उस समाज की नारी का सशक्तिकरण न हो, जब तक उस समाज में नारी को समान अधिकार न हो। हर युग में भारत में ऐसे संतों का अवतरण हुआ, जिन्होंने प्रखरता के साथ नारी सशक्तिकरण की बात कही। इन्हीं में से एक कबीर दास भी थे, जिन्होंने कहा था कि "गये रोये हंसि खेलि के, हरत सबौं के प्राण कहै कबीर या घात को, समझै संत सुजान।" इसका अर्थ यह है कि "गाकर, रोकर, हंसकर या खेल कर नारी सब के प्राण हर लेती हैं।" आज का युग ऐसा युग है, जिसमें महिलाओं को संविधान में कई अधिकार दिए गए हैं। आज महिलाएं इस विकासशील भारत को विकसित बनाने के लिए अपना योगदान देती है परंतु फिर भी उन्हें कई बार अलग-अलग रूपों में प्रताड़ित किया जाता है तथा उनके अधिकारों का हनन किया जाता है। आज हर साल किसी भी परीक्षा में महिलाएं समान रूप से शामिल होती हैं तथा कई बार पुरुषों से अधिक अंक भी लाती हैं, परंतु कहीं न कहीं यह भी सच है कि पैतृक सत्ता समाज होने के कारण पुरुषों को ही मान सम्मान दिया जाता है। ऐसे में अक्सर बेटियों में निराशा का भाव पैदा हो जाता है। आज कई महिलाएं जैसे किरण बेदी, सुष्मिता सेन, पद्मावती बंदोपाध्याय, सुचेता कृपलानी आदि सशक्त हैं। इन्हीं के जैसे समाज की हर नारी को सशक्त करने का दायित्व किसी भी सभ्य समाज का बनता है।

सन्दर्भ:

1. *"संग्रहीत प्रति" मूल* (PDF) *से* 24 *अगस्त* 2015 *को पुरालेखित. अभिगमन तिथि* 14 *दिसंबर* 2015.
2. **उद्धरण योग्य अन्य पुस्तकीय संदर्भ स्रोत**
3. *जे सी अग्रवाल* (1 January 2009). *भारत में नारी शिक्षा. प्रभात प्रकाशन. आईऍसबीऍन* 978-81-85828-77-0.
4. T.N. Kurtz. *मूल से* 19 *फ़रवरी* 2014 *को पुरालेखित. अभिगमन तिथि* 20 *जुलाई* 2016.
5. *सुमन कृष्ण कांत* (1 *सितम्बर* 2001). *इक्कीसवीं सदी की ओर. राजकमल प्रकाशन. आईऍसबीऍन* 978-81-267-0244-2.
6. Female Education: A Study of Rural India. Cosmo Publications. 2003. *आईऍसबीऍन* 978-81-7755-207-2.
7. *डॉ. जे. पी. सिंह,* (1 April 2016). *आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन.* PHI Learning Pvt. Ltd. *आईऍसबीऍन* 978-81-203-5232-2